sunday pioneer

LUCKNOW | SUNDAY | SEPTEMBER 21, 2014

Impact analysis vital for farm research: Expert

Lucknow (PNS): A consultation workshop on impact analysis of agricultural research, education and extension in Uttar Pradesh was organised at the Indian Institute of Sugarcane Research on Saturday. The inaugural session of the workshop was chaired by IISR director S Solomon. Former DG of UPCAR MD Pathak was the chief guest. Addressing the gathering, Solomon said that all research and development projects funded by public money must be audited for analysing impact derived under such projects.

"Then only institutions involved in agricultural research and development are said to be accountable towards public, who actually finance all these projects. Proper and transparent impact analysis of institutions and projects funded by UPCAR (UP Council of Agricultural Research) mill make agricultural scenario in the state more visible and vibrant," Solomon added.

This workshop was jointly organised by Agri Innovation Foundation, Participatory Rural Development Foundation (both NGOs) and IISR. While introducing the workshop theme to delegates, president of Agri Innovation Foundation Bengali remarked that the workshop aimed at listing and agreeing on measurable and observable output and outcome indicators, methodology to measure them and collect required information.

There were deliberations by participating delegates and stakeholders in agriculture research, education and extension. Principal scientist and media incharge AK Sah stated that sugarcane research programmes executed by IISR were continuously being evaluated by stakeholders of the sugar industry.

जनसंदेश टाइम्स

लखनऊ, रविवार, 21 सितम्बर 2014

शोध का मूल्यांकन जरूरी

कार्यशाला

आइआइएसआर में एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित

वैज्ञानिक अधिकाधिक शोध प्रक्षेत्रों में करें काम वैज्ञानिकों का लगा जमावड़ा

लखनऊ। सूबे में कृषि के विकास को गति प्रदान करने के लिए शोध शिक्षा और उससे संबंधित प्रसार परियोजनाओं के क्रियान्वयन का प्रभावी तरीके से मूल्यांकन जरुरी है। यह बात शनिवार को भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान(आइआइएसआर) में यूपी में कृषि शोध,शिक्षा एवं प्रसार के प्रभाव विश्लेषण विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला में संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने कही।

कार्यशाला में उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. सोलोमन ने कहा कि कृषि विशेषकर गन्ना क्षेत्र में चलाये जा रहे विभिन्न शोध एवं विकास परियोजनाओं में पारदर्शिता लाना होगा। इसके लिए यह जरुरी है कि इन परियोजनाओं में खर्च किये जा रहे जन-मानस धन की प्रभावी उपयोगिता को सुनिश्चित किया जाये और यह तभी संभव है जब इन परियोजानाओं से आम किसानों को मिलने वाले लाभ तथा सामुदायिक, सामाजिक एवं पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का मूल्यांकन सही रुप में हो।

इस मौके पर उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि उपकार के भूतपूर्व महानिदेशक डॉ. एम डी पाठक ने अपने संबोधन में वैज्ञानिकों को अधिक से अधिक समय शोध प्रक्षेत्रों पर कार्य करने का आह्वान किया ,जिससे उनके द्वारा किये गये शोध के फलस्वरुप विकसित तकनीक अधिक टिकाऊ और फायदेमंद हो। डॉ. सोलोमन ने अपने उद्बोधन में कहा कि उपकार द्वारा वित्त पोषित शोध परियोजनाओं का प्रभाव आँकलन वास्तव में देश में कृषि को और अधिक गतिशील तथा आकर्षक बनाएगा।

एग्री-इनोवेसन फाउनडेशन के अध्यक्ष डॉ. बंगाली बाबू ने कहा कि उपकार वित्त पोषित परियोजनाओं के प्रभाव आँकलन के लिए माप योग्य परिणाम, परिणाम सूचक तथा सूचना संकलन के विधियों पर विचार-विमर्श करना व एक समेकित योजना या कार्यप्रणाली रुपरेखा तैयार करना इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य है। कार्यशाला में कृषि शोध, शिक्षा एवं प्रसार से जुड़े विभिन्न प्रायोगिक विषयों पर भाग ले रहे साझेदारों ने गहन विचार-विमर्श किया।

इस दौरान डॉ. एस सी मोद्गल, डॉ. ए के सिंह, डॉ. एच रवीशंकर, डॉ. आर सी चौधरी, डॉ. राजेन्द्र कुमार ने मुख्य रूप से अपने विचार इस कार्यशाला में प्रस्तुत किये। *वसं.*

अमर उजाला

लखनऊ 21 सितंबर 2014

शोध के फायदों का आकलन जरूरी

लखनऊ। खेती के लिए हो रहे शोध और इन्हें किसानों के बीच पहुंचाने से उन्हें कितना फायदा हुआ, इन बातों का मूल्यांकन करने की जरूरत है। यह विचार रखते हुए भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने शनिवार को यहां आयोजित कृषि शोध, शिक्षा व प्रसार कार्यशाला की अध्यक्षता की। कार्यशाला में उपकार के पूर्व महानिदेशक डॉ. एमडी पाठक ने वैज्ञानिकों को टिकाऊ तकनीकों पर काम करने के लिए कहा। डॉ. बंगाली बाबू ने उपकार की परियोजनाओं के असर के आकलन, परिणामों के रिकॉर्ड और सूचनाओं के संकलन के लिए रूपरेखा तैयार करने पर जोर दिया। इस दौरान डॉ. पीसी पाठक, डॉ. एसपी मुद्गल, डॉ. एके सिंह, डॉ. एच. रविशंकर, डॉ. आरसी चौधरी, डॉ. राजेंद्र कुमार, आदि वैज्ञानिक मौजूद थे।

लखनऊ, 21 सितंबर 2014 दैनिक जागरण

प्रभावी मूल्यांकन जरूरी

जागरण संवाददाता, लखनऊ: कृषि क्षेत्र में विकास को गति देने के लिए आवश्यक है कि शोध शिक्षा एवं प्रसार से जुड़ी परियोजनाओं का प्रभावी मूल्यांकन किया जाए।

प्रदेश में कृषि शोध, शिक्षा एवं प्रसार के प्रभाव विश्लेषण विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में किया गया। इस मौके पर संस्थान के निदेशक डॉ सुशील सोलोमन ने कहा कि कृषि व विशेषकर गन्ना क्षेत्र में चलाए जा रहे विभिन्न शोध एवं विकास परियोजनाओं में पारदर्शिता लाना होगा। इसके लिए आवश्यक है की परियोजनाओं में खर्च किए जा रहे जन-मानस धन की प्रभावी उपयोगिता को सुनिश्चित किया जाए।

नवभारत टाइम्स । नई दिल्ली/लखनऊ । 21 सितंबर 2014

www.lucknow.nbt.in

फास्ट न्यूज

'शोध में पारदर्शिता हो'

■ एनबीटी, लखनऊ : भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में शनिवार को एक दिवसीय कृषि शोध, शिक्षा एवं प्रसार के प्रभाव विषय पर हुई कार्यशाला में निदेशक सुशील सोलोमन ने शोध में पारदर्शिता का मुद्दा उठाया। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि उपकार के भूतपूर्व महानिदेशक डॉ. एमडी पाठक ने कहा कि वैज्ञानिकों को अधिक से अधिक समय शोध पर काम करना चाहिए।

युनाइटेड भारत, लखनऊ, 21 सितम्बर, 2014

कृषि शोध, शिक्षा प्रसार परियोजनाओं का मूल्यांकन जरूरी : डा. सोलोमन

युनाइटेड समाचार सेवा

लखनऊ २० सितम्बर। उत्तर प्रदेश में कृषि के क्षेत्र में विकास को गति प्रदान करने के लिए यह आवश्यक है कि शोध शिक्षा एवं प्रसार संबंधित परियोजनाओं के क्रियान्वयन उपरान्त प्राप्त परिणाम साझेदारों के स्तर पर कितना प्रभावी है, का आँकलन हो। इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए आज भारतीय गन्ना अनुसंधान लखनऊ में कृषि शोध, शिक्षा एवं प्रसार के प्रभाव विश्लेषण विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। संस्थान के निदेशक डा० सुशील सोलोमन ने कहा कि कृषि व विशेषकर गन्ना क्षेत्र में चलाये जा रहे विभिन्न शोध एवं विकास परियोजनाओं में पारदर्शिता लाना होगा। इसके लिए यह आवश्यक है की इस परियोजनाओं में खर्च किये जा रहे जन-मानस धन की प्रभावी उपयोगिता को सुनिश्चित किया जाये, और यह तभी संभव है जब इन परियोजानाओं से आम-किसानों को मिलने वाले लाभ तथा समुदायिक, सामाजिक एवं पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का मूल्यांकन सही रूप में हो। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि डा० एमडी पाठक, भूतपूर्व महानिदेशक, उपकार ने अपने संबोधन में वैज्ञानिकों को अधिक से अधिक समय शोध प्रक्षेत्रों पर कार्य करने का आह्वाहन किया जिससे उनके द्वारा किये गये शोध के फलस्वरूप विकसित तकनीक अधिक टिकाऊ तथा फायदेमंद हो। डा० सोलोमन ने अपने उद्बोधन में कहा कि उपकार द्वारा वित्त पोषित शोध परियोजनाओं का प्रभाव आँकलन वास्तव में प्रदेश में कृषि को और अधिक गतिशील तथा आकर्षक बनाएगा। कार्यशाला का आयोजन एग्री-इनोवेसन फाउनडेशन, सहभागी ग्रामीण विकास फाउनडेशन तथा भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। कार्यशाला में कृषि शोध, शिक्षा एवं प्रसार से जुड़े विभिन्न प्रायोगिक विषयों पर भाग ले रहे साझेदारों ने गहन विचार-विमर्श किया। इस अवसर पर डा. पीएस पाठक, डा. एससी मोदगल, डा. एके सिंह, डा. एच रवीशंकर, डा. आरसी चौधरी ने अपने विचार व्यक्त किये।